Volume 2; Issue 2
April to Jun 2025

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika

संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 2; April to Jun, 2025; Page No. 25-31

Peer Review, Indexed and Refereed Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद: जीवन दर्शन और चिकित्सा विज्ञान का समन्वय

डॉ. कनक लता

असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग

कुमारी मायावती राजकीय महिला

स्नातकोत्तर महाविद्यालय बादलपुर

शोध सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद स्वास्थ्य की संपूर्ण देखभाल की प्रणाली के रूप में समाहित है। आयुर्वेद की जुड़े लगभग 5000 वर्ष पूर्व अथर्ववेद में मानी जाती है और यही कारण है कि अथर्ववेद मैं सहित आयुर्वेद पांचवा वेद तथा जीवन का विज्ञान भी कहा जाता है। गुरुकुल प्रणाली का अनुसरण करते हुए आयुर्वेद की संपूर्ण ज्ञान, विचार ,मौलिक सिद्धांत चिकित्सीय प्रयोग एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में मौखिक रूप से प्राप्त हुआ । इस संपूर्ण ज्ञान को व्यवस्थित लिखित रूप में दो बड़े ग्रंथ चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता प्राप्त होते हैं। इन्हीं ग्रंथ के कारण ही आयुर्वेद के सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा के लिए समृद्धि का मूल है। चरक संहिता एवं सुश्रुत संहिता पर ही आधारित आयुर्वेद के अन्य ग्रंथ अष्टांग संग्रह एवं अष्टांग ह्रदयम काफी बाद में आए। आयुर्वेद की लोकप्रियता इस स्तर पर बढ़ गई है कि हम अपने जीवन के संपूर्ण स्वास्थ्य सेवा में इसे व्यवहार में ला सकते हैं, किंतु अभी भी इसमें सुरक्षा, प्रभावित और गुणवत्ता के प्रमाणों की आवश्यकता है। अतः राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इस पर विचार करना होगा कि इस क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रयोगशाला में प्रयोग हूं जिससे देहिचक लोग आयुर्वेद को अपना सकें। आयुर्वेद को अधिकतर देशों में चिकित्सा पद्धति के रूप में मान्यता नहीं मिली है। फिर भी भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद के सिद्धांतों का परिशोधन कर भविष्य में वैश्विक स्वास्थ्य सेवा में आवश्यक मापदंड स्थापित करना होगा।

मुख्य शब्द: *आयुर्वेद, अष्टांग संग्रह, शल्य चिकित्सा, सुश्रुत संहिता , चरक संहिता, आयुष विज्ञान, पंचकर्म चिकित्सा, अष्टविध आहार, त्रिदोष, रोग, भारतीय चिकित्सा पद्धति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, भारतीय ज्ञान परंपरा।*

प्रस्तावना -

आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर पांच भौतिक तत्व- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश से बने सूक्ष्म खंड के समान है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण तत्व आत्म तत्व है, जो संपूर्ण चेतना के लिए मुख्य कारक है एवं जीवन का परिचायक है । मानव शरीर में तीन प्रकार के दोष पाए जाते हैं जिन्हें वात पित्त और कफ कहते हैं जिनका अनुपात सही रहने पर शरीर स्वस्थ होता है और उनमें संतुलन आने पर विभिन्न प्रकार के रोग हो जाते हैं।आयुर्वेद ऐसा मानता है कि शरीर में जो भी रोग होते हैं उसका मूल कारण वात, पित्त और कफ में से ही कोई एक कारण होता है। शरीर के ढांचे को तैयार करने वाले तत्व सप्त धातु कहलाते हैं। रस रक्त मांस में अस्ति मजा एवं शुक्र के रूप में यह सा धातु शरीर को पुष्ट करते हैं अर्थात मूल संरचना तैयार करते हैं। शरीर में सभी जैव रूपांतरण प्रक्रियाएं अग्नि एवं अन्य स्रोत से ही होती हैं और इस प्रक्रिया में अपशिष्ट पदार्थ मल कहलाते हैं जैसे विष्ठा, मूत्र, श्वेद आदि। दोष, धातु एवं मल का एकीकृत संतुलन तथा आत्मा मस्तिष्क और ज्ञानेंद्रिय की प्रसन्नता स्वास्थ्य कहलाती है और इन कारकों में संतुलन से अस्वस्थता होती है।

रोगों का निदान एवं प्रबंधन का तरीका आयुर्वेद में अत्यंत अलग है ।आयुर्वेद में रोग निदान का सैद्धांतिक अर्थ है किसी भी व्यक्ति में रोग के मूल कारण तथा रोग में दिखाई देने वाली प्रक्रिया को पूरी तरह समझना रोग की संपूर्ण कारण, दोष, धातु एवं मल को संतुलित करने और स्वस्थ करने के उद्देश्य के साथ उपचार किया जाता है।

आयुर्वेद का उद्भव एवं विकास

प्रथम सहस्त्र शताब्दी ईसा पूर्व के अंत तक आयुर्वेद दो शाखाओं आत्रेय संप्रदाय- सामान्य चिकित्सकों का संप्रदाय एवं धनवंतरी संप्रदाय- शल्य चिकित्सकों का संप्रदाय के साथ स्थापित हो चुका था ,जो क्रमशः रोगों के चिकित्सीय एवं शल्य पहलुओं को संभालते थे। उस समय चिकित्सा को 8 वर्गों में बांटा गया था।

1.कायचिकित्सा (औषधि)

2.शल्य चिकित्सा(सर्जरी)

3. शलाक्य (नेत्र चिकित्सा एवं कान, नाक, गला)

4. कौमार भृत्य (बाल रोग चिकित्सा)

5. अंगद तंत्र (विष विज्ञान)

6. भूत विद्या (मनोचिकित्सा)

7. रसायन (जरा विज्ञान)

8. और वज्जीकरण (पौरुष शक्ति एवं स्वस्थ संतान उत्पत्ति का विज्ञान)

उपरोक्त स्वास्थ्य के आठ विज्ञान का नाम अष्टांग आयुर्वेद पड़ा। स्वास्थ्य चिकित्सा के मूल सिद्धांतों एवं विषयों का वर्णन मुख्य रूप से दो प्रबंध ग्रंथ बृहद त्रयी जो चरक संहिता, सुश्रुत संहिता एवं अष्टांग संग्रह पर आधारित है, और लघुत्रयी जो माधव निदान, शारंगधर संहिता एवं भाव प्रकाश पर आधारित है, में प्राप्त होता है। समय-समय पर आयुर्वेद के विभिन्न पक्ष विकसित एवं वर्णित हुए हैं और इन ग्रंथो के उद्देश्य आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों का सरलीकरण करना है । उदाहरण के लिए चरक संहिता में जीवन, स्वास्थ्य एवं औषधि के दर्शन तथा विभिन्न रोगों के उपचार की पारंपरिक पद्धति पर विचार दिए गए हैं। इसी क्रम में सुश्रुत संहिता में रोगों की शल्य चिकित्सा जैसे आंख, कान, नाक , गला ,दांत संबंधी रोगों का निदान करने के साथ-साथ प्राकृतिक शल्य उपचार की पद्धति पर भी प्रकाश डाला गया है। काश्यप संहिता मुख्य रूप से बाल स्वास्थ्य ,माधव संहिता रोगों के कारण एवं लक्षणों के परीक्षण, भाव प्रकाश अर्क एवं मिश्रण से रोगों के उपचार एवं खाद्य वस्तुओं के वर्णन तथा अंत में शारंगधर संहिता औषधीय एवं खुराकों के विभिन्न पक्षों से संबंधित है ।समय-समय पर नए प्रयोग एवं आवश्यक परिवर्तनों के माध्यम से आयुर्वेद के सैद्धांतिक ढांचे एवं व्यावहारिक पक्ष को मजबूत करने के लिए सतत एवं व्यवस्थित प्रयास किए गए हैं। मूल ग्रन्थों के बाद में विभिन्न प्रकार के टीका एवं भाष्य ने आयुर्वेद की बारीकियों एवं जटिलताओं को और स्पष्ट किया है तथा भ्रम दूर करने में सहायता की है। आयुर्वेद के विकास एवं उद्भव की प्रक्रिया में लगातार प्रयासों के कारण इस समय आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांत विचार प्रयोग काफी सीमा तक स्पष्ट हो चुके हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद की प्रासंगिकता

आयुर्वेद को सदैव सामान्य जन का संरक्षण मिला है और स्वतंत्रता से पूर्व प्रतिकूल समय में भी यह जीवित रहा। स्वतंत्र भारत में आयुर्वेद को आधिकारिक रूप से स्वास्थ्य एवं चिकित्सा ज्ञान प्रणाली की मान्यता दी गई जिसे संहिताबद्ध किया गया है,पर्याप्त रूप से इसे व्यवस्थित बनाया गया है । इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा के संवर्धन एवं विकास हेतु आयुर्वेद एक अभिन्न अंग है। आयुर्वेद तथा अन्य आयुष पद्धतियों के लिए सहायक नीतियां विकसित हो रही है और राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति

1983 राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में उल्लेखित विभिन्न रणनीतियां एवं राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन 2007 के क्रियान्वयन ढांचे में आयुर्वेद का क्षेत्र और अधिक विकसित हुआ है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में आयुर्वेद स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा में एक विशिष्ट पाठ्यक्रम के रूप में शामिल है साथ ही विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं में नई शिक्षा नीति के अनुसार अनिवार्य स्किल कोर्स में भी आयुर्वेद को अपनाया गया है। आयुर्वेदिक रूप से रोगी के परीक्षण रोग निदान, प्राकृतिक चिकित्सा इत्यादि के विभिन्न आयाम पाठ्यक्रम में सिखाए जाते हैं। जिससे छात्र-छात्राएं योग एवं आयुर्वेद को एक साथ जोड़कर जीवन में धारण करके अपनी जीवकोपार्जन का साधन जुटाए। सुश्रुत संहिता में स्वास्थ्य की समग्र परिभाषा दी गई है जिसके अनुसार क्रियात्मक संरचनात्मक एवं अपशिष्ट पदार्थों के स्थिर संतुलन के साथ स्वस्थ, सुव्यवस्थित एवं प्रसन्नता पूर्ण जीवन की स्थिति ही स्वास्थ्य है। स्वास्थ्य को जीवन का आनंद लेने एवं कर्तव्य परायणता तथा भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के लिए पहली शर्त माना जाता है। किसी भी व्यक्ति का भौतिक मनोवैज्ञानिक स्वभाव निर्धारित करने में विभिन्न प्रकार के संयोजनों एवं पांच भौतिक तत्वों की गतिशील भूमिका तथा सूक्ष्म तत्वों के साथ उनके तालमेल की भूमिका होने के कारण उनमें रोगों के कारण, निदान, निर्धारण तथा जीवन शैली के प्रबंधन एवं उपचार में व्यक्ति की प्रकृति की महत्ता होती है। माना जाता है कि किसी भी व्यक्ति की मौलिक संरचना उसके जन्म के पहले ही प्रकट हो जाती है और जीवन भर बदलती नहीं है लेकिन उस पर विभिन्न कारकों का प्रभाव होता है और जन्म स्थान, पारिवारिक विशेषताओं, उम्र, मौसम एवं व्यक्तिगत स्वभाव के अनुसार उसकी शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थिति में परिवर्तन होता है। आयुर्वेद में माना जाता है कि बुद्धिमत्ता एवं तर्कसंगत तरीके से प्रयोग करने पर सभी पदार्थों में औषधीय गुण होते हैं। आयुर्वेदिक दवाओं के लिए कच्चा माल मूलतः पौधों, जीवों एवं खनिज उत्पादो से प्राप्त होता है ,जिसका विभिन्न प्रकार से उपयोग कर अलग-अलग औषधियां बनाई जाती है प्रयोग किए गए घटकों की प्रकृति के आधार पर आयुर्वेदिक औषधियां को जड़ी- बूटी, जड़ी - खनिज एवं खनिज के श्रेणी में बांटा गया है । खनिज पदार्थ से बनाई गई औषधीय को रस औषधि की श्रेणी में रखा गया है, जिन्हें तैयार करते समय शोधन, मारण, अमृतीकरण आदि पद्धतियों का प्रयोग किया गया है किया जाता है ताकि वह भविष्य ताकि वे औषधि रूप में सुरक्षित एवं प्रभावी हो। आयुर्वेदिक साहित्य औषधीय पौधों से तैयार एक तत्व और अनेक तत्वों वाली

औषधियों से भरा हुआ है, जिनका प्रयोग आज भी होता है और उनमें से प्रमुख औषधियां को नेशनल फॉर्म्युलरी और फार्माकोपिया ऑफ आयुर्वेद में सूचीबद्ध किया गया है। आयुर्वेदिक उपचार में अनुपान (दूध, गर्म जल, काढ़ा जैसे पदार्थ, जिनमें दवा मिलाकर दी जाती है) और भेषज काल (दवा लेने का समय) बहुत महत्वपूर्ण है। किसी रोगी की चिकित्सा की प्रक्रिया की प्रकृति रोग की गंभीरता एवं स्थिति और रोगी की अवस्था के आधार पर निश्चित की जाती है, निश्चित समय पर निश्चित अवधि के बाद निश्चित अनुपान के साथ निश्चित मात्रा में दवा दी जाती ताकि दवा ठीक से शरीर में पहुंचे और शरीर में वांछित परिवर्तन हो एवं उसका सकारात्मक प्रभाव दिखे। आयुर्वेदिक ग्रंथों में रोग की प्रकृति एवं स्थल, लक्षणों ,पाचन की स्थिति औषधि की मात्रा आदि के आधार पर औषधि लेने के 11 काल बताए गए हैं। यद्यपि आयुर्वेद विभिन्न रोगों का समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम है लेकिन गंभीर तथा क्षयकारी रोगों की चिकित्सा तथा चयापचयी एवं जरा संबंधी समस्याओं के लिए पंचकर्म चिकित्सा, गुदा रोगों के लिए क्षारसूत्र और रोगों से बचाव के लिए अष्टविध आहार को जीवन शैली में धारण किया जाना इत्यादि बताए गए हैं। रोग की प्रक्रिया की गंभीरता एवं रोगी की शक्ति पता लगाने के लिए रोग एवं रोगी दोनों की जांच की दोहरी प्रक्रिया अपनाई जाती है। उसी के अनुसार रोग के पहले से उपस्थित एवं गंभीर कारकों को समाप्त करने की दृष्टिकोण से उपचार के तौर पर तरीके निश्चित किए जाते हैं, जैसे औषधि भोजन एवं व्यवहार में परिवर्तन के माध्यम से रोग का शमन करना, पंचकर्म चिकित्सा द्वारा शरीर का शुद्धिकरण करना तथा अस्वस्थता पर नियंत्रण कर स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक सावधानी बरतना एवं जीवन शैली में परिवर्तन करना। इस प्रकार प्रत्येक रोगी की विशिष्ट पद्धति का प्रयोग करना आयुर्वेदिक उपचार की विशेषता है।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद केवल एक चिकित्सा पद्धति नहीं, बल्कि जीवन के समग्र दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। यह शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य पर बल देता है तथा स्वास्थ्य को केवल रोगों की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आत्मिक संतुलन की अवस्था मानता है। आयुर्वेद की जड़ें वैदिक साहित्य विशेषतः अथर्ववेद में गहराई से समाहित हैं, जिससे इसकी प्राचीनता और प्रमाणिकता सिद्ध होती है।

चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांग संग्रह जैसे ग्रंथों ने चिकित्सा के सिद्धांतों, पद्धतियों और

जीवन शैली के निर्धारण में मार्गदर्शन प्रदान किया है। इन ग्रंथों में पंचकर्म, त्रिदोष सिद्धांत, सप्त धातु, भेषज काल, अष्टविध आहार जैसे तत्त्व आयुर्वेद की वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता को सिद्ध करते हैं। वर्तमान समय में जब आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की सीमाएँ स्पष्ट होती जा रही हैं, तब आयुर्वेद पुनः स्वास्थ्य विज्ञान की एक सशक्त विकल्प के रूप में उभर रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, एवं आयुष मंत्रालय की सक्रिय पहलें आयुर्वेद को पुनर्जीवित और पुनर्संरचित कर रही हैं। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में इसका शिक्षण, शोध प्रयोगशालाओं में परीक्षण तथा वैश्विक स्तर पर मान्यता हेतु प्रयास, इस ज्ञान परंपरा को पुनः केंद्रीय भूमिका में ला रहे हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि आयुर्वेद के पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया जाए। इसके सिद्धांतों का व्यवहारिक परीक्षण एवं वैश्विक स्वास्थ्य सेवा में इसे अपनाने हेतु मानकों का निर्माण किया जाए, जिससे भारत की यह अमूल्य धरोहर संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1.चरक, महर्षि. *चरक संहिता*. संपादक पं. जगदीश चंद्र त्रिपाठी, चौखम्बा ओरिएंटालिया, 2013.

2.सुश्रुत, महर्षि. *सुश्रुत संहिता*. संपादक डॉ. पी. वी. शर्मा, चौखम्बा विश्वभारती, 2010.

3.वाग्भट. *अष्टांग हृदयम्*. संपादक के. आर. श्रीधर, कृष्णदास अकादमी, 2012.

4.काश्यप. *काश्यप संहिता*. चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ ऑफिस, 2004.

5.माधव. *माधव निदान*. चौखम्बा प्रकाशन, 2015.

6.शारंगधर. *शारंगधर संहिता*. चौखम्बा ओरिएंटालिया, 2008.

7.भावमिश्र. *भाव प्रकाश*. चौखम्बा भारत अकादमी, 2011.

8.भारत सरकार. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, 2020.

9.आयुष मंत्रालय. *भारतीय चिकित्सा पद्धतियों पर राष्ट्रीय नीति*. भारत सरकार, 2020.

10.विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO). *पारंपरिक एवं पूरक चिकित्सा की कानूनी स्थिति: वैश्विक समीक्षा*. WHO प्रकाशन 2001.

11.शर्मा, हंसराज. *आयुर्वेद के सिद्धांत*. चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, 1987.

12.कटोच, डी. सी. *आयुर्वेद का उद्भव एवं विकास*. *योजना पत्रिका*, अंक 6, 2015.

13. www.ayushportal.ap.nic.in- आयुष रिसर्च पोर्टल।

14. www.indianmedicine.nic.in- आयुष मंत्रालय भारत सरकार।

15. www.ravdelhi.nic.in- राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली।